Report

of the Workshop on

"INDIAN KNOWLEDGE SYSTEM & BIOLOGICAL SCIENCES"

to celebrate the 6th anniversary of

Akhil Bharatiya Shiksha Samagam 2026

05 AUGUST 2026

Jointly Organized by:

The Departments of Zoology, Botany and Sanskrit

Govt. Post Graduate College Berinag, Pithoragarh

SSJ University Almora Uttarakhand

262531

GOVT. P. G. COLLEGE BERINAG, PITHORAGARH

Akhil Bharatiya Shiksha Samagam 2026

to celebrate 6th anniversary under the theme

NEP: Shiksha se Viksit Bharat

We cordially invite you to be a part of

Indian Knowledge System and Biological Sciences

on 05 August 2026 at 12:00 pm

KEYNOTE SPEAKER

Padma Shri Dr. Kalyan Singh Rawat

Prof. B. M. Pandey
Principal

Organizing Secretary
Zoology, Botany & Sanskrit Departmental Association

Convenor (s)
Department of Zoology, Botany & Sanskrit

Co-Convenor
IQAC/IAC

ABOUT THE SPEAKER

श्री कल्याण सिंह रावत

श्री कल्याण सिंह रावत शिक्षाविद् के साथ–साथ समाज सेवी हैं। वर्तमान में मैती संस्था के संस्थापक सचिव हैं। वृक्षारोपण को सार्थक तथा प्रभावी रूप से सफल बनाने के लिए आपने भावनात्मक स्वरूप देकर 'मैती आन्दोलन' की आधार शिला रखी। माँ और बेटी के भावुक रिश्तों को एक पेड़ से जोड़कर, पर्यावरण संवर्द्धन एवं संरक्षण की दिशा में एक मील का पत्थर खड़ा किया। विवाहोत्सव पर बेटी अपने जीवन साथी के साथ मिलकर एक यादगार वृक्ष लगाते हैं। बेटी के विदा होने के बाद स्वतः ही माँ अपने बेटी के लगाये पेड़ की सुरक्षा तथा देख–भाल की जिम्मेदारी बडी सजगता के साथ करती है। गाँव की बेटियों के द्वारा शादी में लगाये गये ये पेड़ गांव के भविष्य के खुशहाली और समृद्धि के कारक बन जाते हैं। भावनात्मक रिश्तों से जुड़ा यह वृक्षारोपण धीरे–धीरे लोकप्रिय होता गया और 1995 से अब तक लगभग पाँच लाख से अधिक शादियों में पेड़ लगा चुके हैं। कई स्मृति वनों की स्थापना भी हुई है। यह आन्दोलन अब एक प्राकृतिक संस्कार का रूप ले चुका है। कई राज्यों और देशों ने इस पहल को स्वीकारोक्ति दी है। वनों के संरक्षण एवं संवर्द्धन, वन्य प्राणियों के संरक्षण, हिमालय तथा जल स्रोतों के संरक्षण, सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण हेतु आपने दो दर्जन से अधिक सफल अभिनव प्रयोग सम्पादित किए हैं। वर्तमान में 'ग्राम' गंगा अभियान' चलाकर प्रवासी लोगों को उनके पैतृक गाँवों के विकास से जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं।

श्री रावत का जन्म 19 अक्टूबर 1953 को उत्तराखण्ड राज्य के जनपद चमोली के बैनोली गांव में हुआ था। हेमवतीनंन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर गढ़वाल से वर्ष 1975 में विज्ञान से स्नातक तथा 1977 में वनस्पति विज्ञान से स्नातकोत्तर की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1978 में बी0एड. तथा 1980 में एम.ए. इतिहास तथा 1984 में एम.ए. राजनीतिशास्त्र इसी विश्व विद्यालय से किया। वर्ष 1979 में माध्यमिक शिक्षा में अध्यापन का कार्य शुरू किया। वर्ष 2000 से 03 तक जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण केन्द्र गौचर चमोली में प्रवक्ता के पद पर कार्यरत रहे। वर्ष 2003 से 2009 तक जिला समन्वयक, सर्व शिक्षा अभियान देहरादून पर कार्य किया। 2009 से 2012 तक उत्तराखण्ड अन्तरिक्ष उपयोग केन्द्र देहरादून में वैज्ञानिक एससी के पद पर कार्य किया। वर्ष 2014 को राजकीय सेवा से प्रवक्ता के पद से सेवा निवृत हुए। इस अवधि में शैक्षणिक, वैज्ञानिक कार्यों के अलावा पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्द्धन की दिशा में अनेकों सफल अभिनव प्रयोगों से समाज को लाभान्वित किया।

श्री रावत ने वर्ष 1995 में जनपद चमोली के ग्वालदम कस्बे से 'मैती आन्दोलन' की शुरूआत की थी। मैत अर्थात मायका से विदाई लेते समय दूल्हा–दुल्हन एक यादगार वृक्ष लगाते हैं। शादी की यादगार में लगाये इस पेड़ की भावनात्मक रूप से देख–भाल का जिम्मा दुल्हन की माँ सम्भालती हैं। बेटी के लगाये पेड़ को माँ कभी सूखने नहीं देती है। गाँव में हर शादी पर पेड़ लगते हैं। भविष्य में बेटियों के लगाये पेड़ उस गाँव के समृद्धि के कारक बन जाते हैं। यह स्वस्फूर्त विचार भारत के 18 से अधिक राज्यों तथा पाँच से अधिक देशों तक लोकप्रिय हो चुका है।

श्री रावत ने हिमालय के दुर्लभ वन्य प्राणियों के संरक्षण हेतु 1976 में 'हिमालय वन्य जीव संस्थान' की स्थापना गोपेश्वर चमोली में की थी। विभिन्न जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से पांच हजार से अधिक वन्य प्राणियों को शिकारियों के चुंगल से बचाने में सफल रहे हैं। 1974 में श्री रावत प्रसिद्ध चिपको आन्दोलन में पद्मभूषण चण्डी प्रसाद भट्ट जी के साथ भी कार्य कर चुके हैं। श्री रावत ने अब तक कई बॉज तथा मिश्रित प्रजाति के वनों का भी निर्माण कियाा है। वर्ष 2000 में 5 हे0 क्षेत्र में 'श्रीनंदा देवी स्मृति मैती वन', कारगिल की शहीदों की याद में 'शौर्यवन', 'गौरादेवी' वन, पितृवन प्रमुख हैं। पर्यावरण जागरूकता के लिए उत्तराखण्ड में तीन बड़े–बड़े मेलों का आयोजन किया जिनमें प्रमुख, 'नन्दासैंण पर्यटन–पर्यावरण मेला', श्रावणी विकास एवं पर्यावरण मेला नारायण बगड़, 'राजगढ़ी पर्यटन एवं पर्यावरण मेला' प्रमुख हैं।

श्री रावत ने राजगढ़ी उत्तरकाशी में स्कूल स्तर की सबसे बड़ी पौधाशाला तैयार करके चालीस हजार पौध तैयार की समीपवर्ती 40 गाँवों में स्कूली बच्चों को देकर वृक्षारोपण कराया, ग्वालदम, चमोली में देवदार प्रजाति के दस हजार पौध तैयार करके 'गौरावन' 'इंदिरावन', 'देववन', विकसित किए, वर्ष 2010 में उत्तराखण्ड वृक्षारोपण नोडल अधिकारी के रूप में पूरे राज्य वासियों, छात्र–छात्राओं के माध्यम से एक घण्टे की अवधि में बारहलाख से अधिक पौधों का रोपण करके 'कीर्तिमान स्थापित किया।

श्री रावत ने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम के तहत् राज्य के प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में विद्यालय की दो गरीब बेटियों का चयन करके उनसे मा0 विधायक जी का पेड़ लगाकर उनको मा0 विधायक जी से जोड़ा तथा मा0 विधायक जी इन बेटियों को आगे बढ़ने में सहयोग करते हैं। इस प्रकार 140 बेटियाँ लाभान्वित हो रही हैं। वर्तमान में 'ग्राम गंगा अभियान' चलाकर हिमालयी गाँवों में पलायन को रोकने तथा प्रवासी लोगों को उनके पैतृक गाँव से जोड़ने का कार्य कर रहे हैं।

श्री कल्याण सिंह रावत को उनके उल्लेखनीय कार्यों हेतु **महामहिम राष्ट्रपति जी द्वारा सन 2022 में पद्म श्री सम्मान से अलंकृत किया गया।** कई संस्थाओं, संगठनों द्वारा भी इन्हें सम्मानित किया गया है। कुछ प्रमुख सम्मानों में 2005 में गॉड फ्रे फिलिप्स ब्रेवरी एवार्ड, 2003 में पर्वतजन सम्मान, 2009 में सी आईआई ग्रीन एवार्ड, 2012 उत्तराखण्ड रत्न, 2003 में दूनरत्न, 2004 में गढ़ विभूति सम्मान, 2008 में देवभूमि प्रतिमा सम्मान, 2013 में पर्वत श्री सम्मान, 2000 में गढ़ गौरव सम्मान, 2002 में ज्योति शिखा सर्वोतम सम्मान, 2018 में गौरा देवी सम्मान, 2017 में उत्तराखण्ड सोशल आइकान सम्मान, 2015 में वृक्ष मित्र सम्मान, 2006 में नन्दा देवी सम्मान, 2012 में उत्तराखण्ड स्पर्श गंगा सम्मान, 2018 में नेशनल न्यूज गौरव सम्मान, 2006 में पर्यावरण मित्र सम्मान, 2011 में डा. शिवानंद नौटियाल फाउण्डेशन सम्मान, 2004 में 'पर्यावरण सम्मान, 2015 में नेशनल सांइस एकेडेमी ''द वेस्ट साइंस टीचर एवार्ड'', 2004 में भारत ज्ञान विज्ञान सम्मान, 2008 में श्री शत् चण्डिका समाज सेवा सम्मान, 2019 में लाइफ टाइम एचीवमेंट एवार्ड सहित अनेक सम्मान एवं एवार्ड दिए गये हैं।

WORKSHOP HIGHLIGHTS

- A one-day seminar on the theme "**Indian Knowledge System and Biological Sciences**" was jointly organized in hybrid mode by the Department of Zoology, Department of Botany and Department of Sanskrit in the college campus on August 5th 2026 at 11:30 AM.
- The program was organized under the guidance of Prof. B. M. Pandey, Principal, Govt. Post Graduate College Berinag, Pithoragarh and the event marked the completion of six years of the National Education Policy (NEP) 2020 as part of the "*Akhil Bharatiya Shiksha Samagam 2026*".
- **Dr. Kalyan Singh Rawat**—the pioneer of Uttarakhand's '*Maiti Andolan*' (Maiti Movement) and a Padma Shri awardee—attended the event as the keynote speaker.
- About 130 students participated in the program and gained deep insights on the Indian Knowledge System.
- The program commenced with the lighting of the ceremonial lamp by the college principal, Prof. Pandey. In his address, he emphasized the need to establish harmony between wildlife and Indian culture at both local and global levels. He further noted that it is essential for policymakers to formulate a robust Standard Operating Procedure (SOP) for nature conservation and stressed the importance of exercising restraint in our own behavior.
- Subsequently, Dr. Hemlata, Head of the Department of Botany, stated that the Indian knowledge tradition is considered one of the oldest, richest, and most holistic educational traditions in the world. She further explained that the objective of education in ancient India was to foster self-realization, self-development, nature conservation, and a sense of social responsibility. She also noted that the concepts of biodiversity conservation that modern scientists are currently deliberating upon have been embedded in India's traditional knowledge for centuries.
- In his address, the seminar's keynote speaker, **Padma Shri Dr. Kalyan Singh Rawat**, shared significant information about the "*Charaka Samhita*" and

"*Sushruta Samhita*"—texts deeply rooted in India's knowledge system—and noted that the libraries at Nalanda and Takshashila universities had gradually fallen into ruin over time. He also highlighted the alarming rate of daily deforestation and emphasized the need for serious measures regarding nature conservation, ensuring that future generations can also benefit from natural resources.

- He also held an in-depth discussion on the Earth's steadily rising temperatures and warned that unless nature and natural resources are conserved in time, survival will become difficult for all of creation in the future. He further pointed out that Uttarakhand is a highly sensitive region situated in an earthquake zone, and if the tampering with nature is not curtailed, there is a likelihood of catastrophic damage in the future.
- Shri Rawat further stated that the "*Bugyals*"—velvety alpine meadows nestled in the lap of the Himalayas—serve as a foundation for life; describing them as symbols of our Indian cultural and spiritual heritage, he emphasized the need to launch local awareness campaigns for their preservation and enrichment.
- At the conclusion of the seminar, Dr. Deepti Karki, Assistant Professor (Sanskrit), proposed the vote of thanks.
- Ms. Rashmi Selwal, Assistant Professor (Economics), anchored the event. Dr. Mahesh Chandra Vishwakarma, Assistant Professor (Chemistry), provided technical support for the successful conduct of the program, while Dr. Aman Verma, Assistant Professor (Zoology), Dr. Ashwani Kumar, Assistant Professor (Botany), Dr. Mukesh Lal Shah, Assistant Professor (Zoology), and Dr. Teeka Singh, Assistant Professor (Botany), made significant contributions to the event.
- All faculty members and students of the college were present at the program.

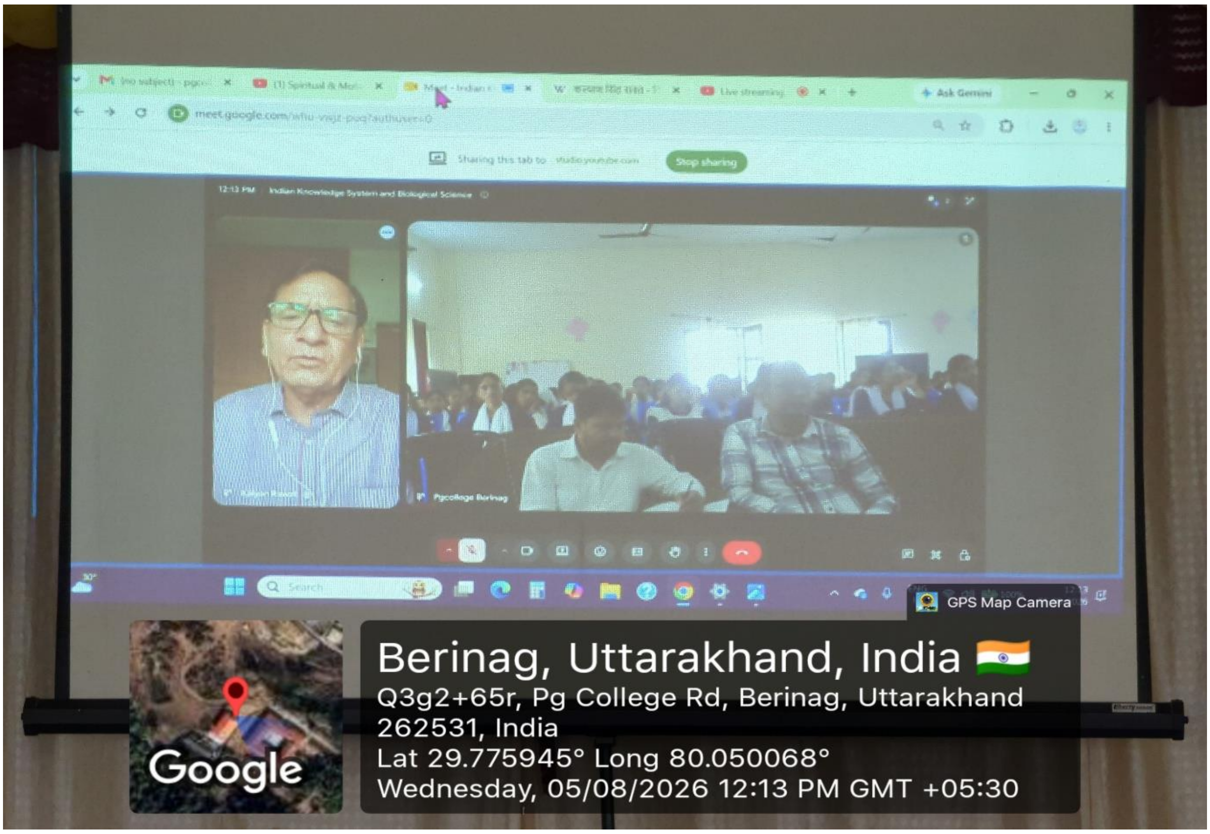

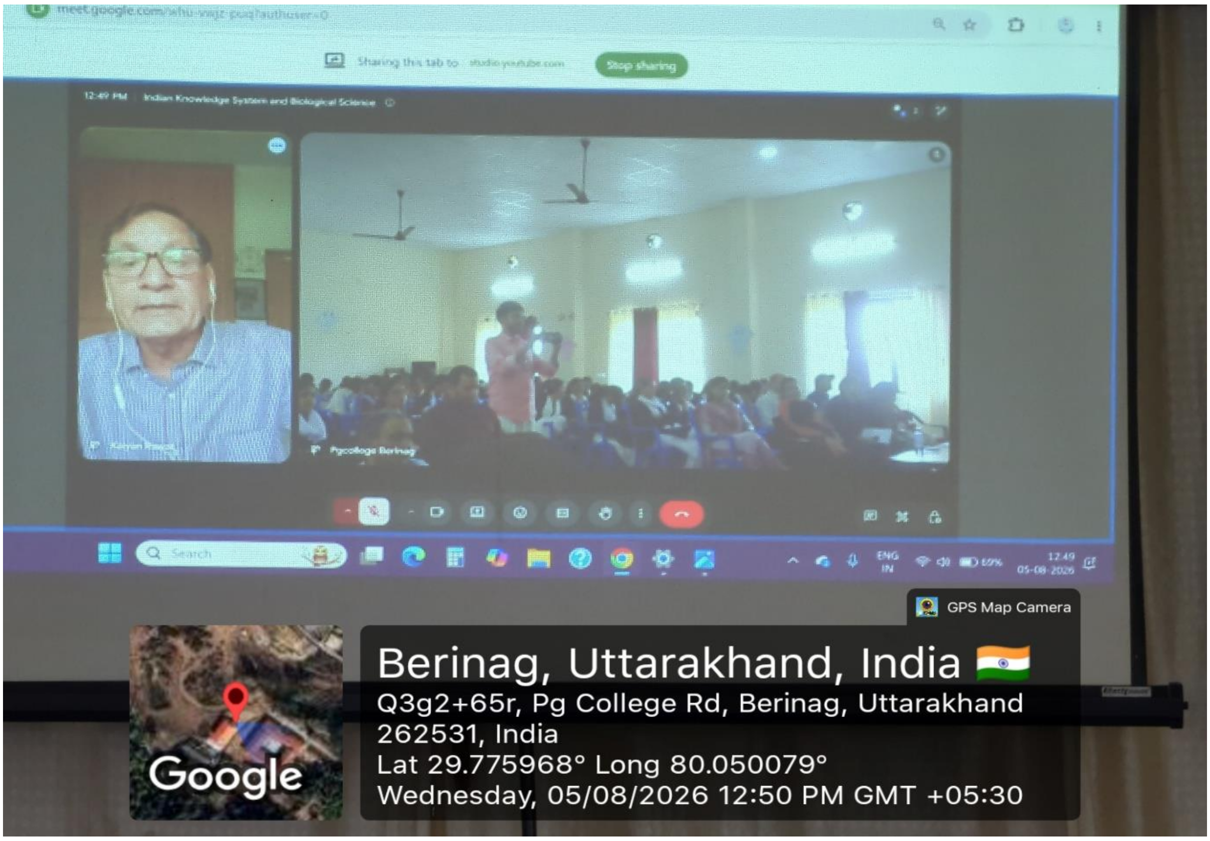

Online Lecture by Keynote Speaker Padma Shri Dr. Kalyan Singh Rawat

Faculty members and students attending the program

Ms. Rashmi Selwal, Assistant Professor (Economics), G.P.G.C. Berinag, anchoring the program

Dr. Hemlata, Assistant Professor (Botany), G.P.G.C. Berinag, delivering lecture in the program

Prof. B. M. Pandey, Principal, G.P.G.C. Berinag, addressing the speaker and students in the program

Dr. Deepti Karki, Assistant Professor (Sanskrit), G.P.G.C. Berinag, delivering vote of thanks in the program

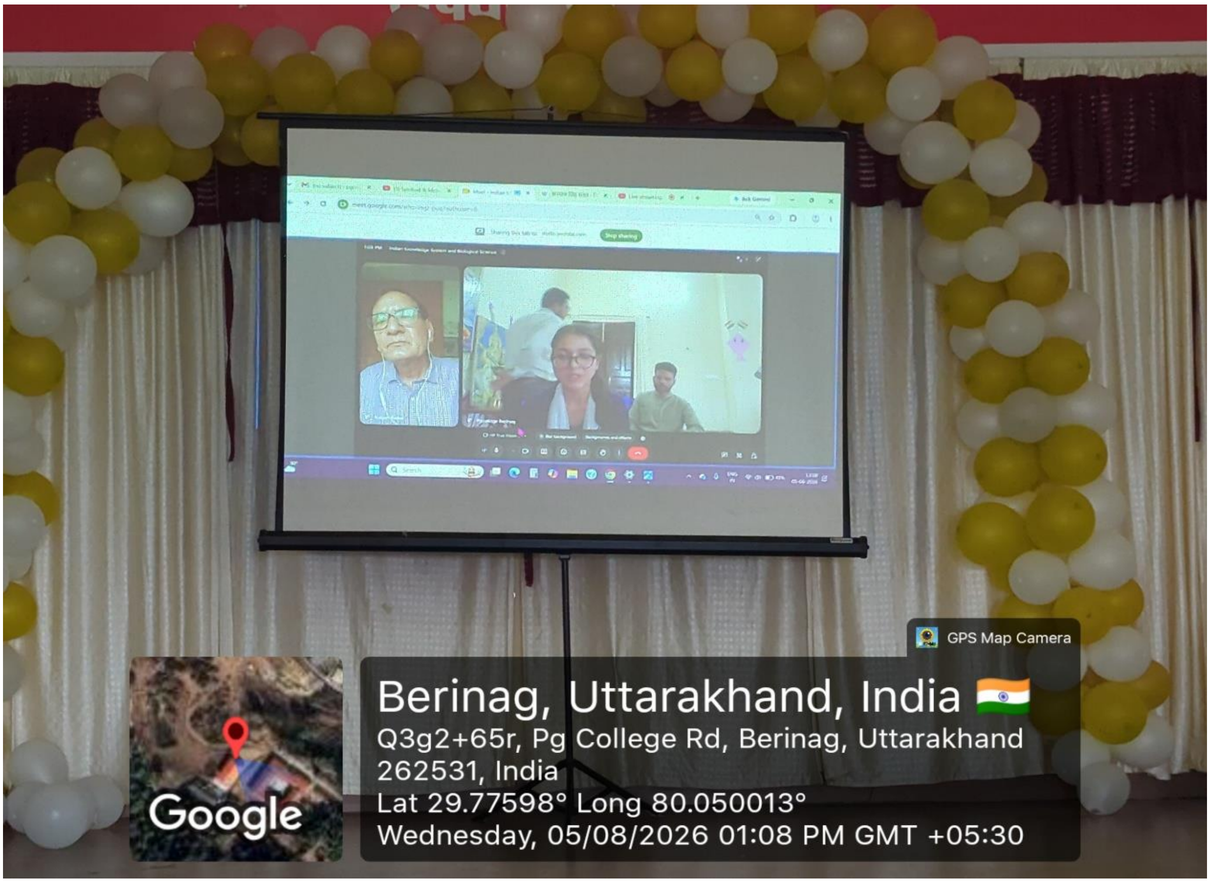

Interaction of students with the speaker, Padma Shri Dr. Kalyan Singh Rawat

Plantation by students and teachers

OUTCOMES OF THE PROGRAMME

1. **Enhanced awareness of the Indian Knowledge System (IKS):** The seminar enhanced students' and faculty members' understanding of the richness, relevance, and holistic nature of the Indian Knowledge System, particularly its contributions to education, health, ecology, culture, and environmental conservation.

2. **Integration of IKS with Biological Sciences:** Participants gained insights into the connections between traditional Indian knowledge and modern biological sciences, particularly in areas such as biodiversity conservation, medicinal knowledge, sustainable use of natural resources, and ecological balance.

3. **Promotion of environmental consciousness:** The programme sensitized approximately 130 students towards the urgent need for conservation of forests, wildlife, natural resources, and fragile Himalayan ecosystems. The discussions encouraged participants to recognize their individual and collective responsibility towards environmental protection.

4. **Awareness about traditional conservation practices:** Students were introduced to indigenous conservation traditions and culturally embedded practices, including the significance of the *Bugyals* and community-based environmental initiatives such as the *Maiti Movement*, thereby strengthening appreciation for local ecological knowledge.

5. **Understanding of the relevance of ancient texts:** The seminar highlighted the scientific and contemporary relevance of classical Indian texts such as the *Charaka Samhita* and *Sushruta Samhita*, encouraging participants to explore India's traditional contributions to health and biological knowledge.

6. **Awareness of Himalayan ecological vulnerability:** Participants developed greater awareness of the ecological sensitivity of Uttarakhand, including the impacts of deforestation, climate change, increasing temperatures, and unsustainable human interventions on Himalayan ecosystems.

7. **Promotion of sustainable development and responsible behaviour:** The programme encouraged students to adopt environmentally responsible behaviour and understand the importance of sustainable utilization of natural resources for the welfare of present and future generations.

8. **Strengthening interdisciplinary learning:** The joint organization by the Departments of Zoology, Botany, and Sanskrit created an interdisciplinary platform connecting biological sciences with traditional knowledge, culture,

and language studies, in line with the multidisciplinary approach advocated under NEP 2020.

9. **Development of conservation-oriented thinking:** The discussions motivated students to think critically about contemporary environmental challenges and the need for locally relevant conservation strategies, community participation, and responsible policymaking.

10. **Contribution towards the objectives of NEP 2020:** The programme supported the vision of NEP 2020 by promoting multidisciplinary education, Indian knowledge traditions, experiential and contextual learning, environmental awareness, cultural rootedness, and responsible citizenship.

Overall Outcome

The seminar successfully created a meaningful bridge between India's traditional knowledge heritage and contemporary biological sciences, while fostering environmental awareness, cultural appreciation, and conservation-oriented thinking among students and faculty. It encouraged participants to recognize the value of indigenous ecological knowledge and its potential contribution to addressing contemporary challenges such as biodiversity loss, climate change, deforestation, and sustainable resource management.

बेरीनाग पीजी कॉलेज में भारतीय ज्ञान परंपरा एवं जीव विज्ञान' पर एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजित

रूद्र टाइम्स

बेरीनाग (पिथौरागढ़)। राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बेरीनाग में नई शिक्षा नीति–2020 के छह वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर अखिला भारतीय शिक्षा समागम के तहत वनस्पति विज्ञान, जंतु विज्ञान एवं संस्कृत विभाग के संयुक्त तत्वावधान में ष्भारतीय ज्ञान परंपरा एवं जीव विज्ञानष् विषय पर हाइब्रिड मोड में एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य प्रो. बी.एम. पाण्डेय ने दीप प्रज्वलित कर किया। मुख्य वक्ता पद्मश्री एवं उत्तराखंड मैती आंदोलन के प्रणेता डॉ. कल्याण सिंह रावत ने भारतीय ज्ञान परंपरा, जैव विविधता संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण, बुग्यालों के महत्व और जलवायु परिवर्तन पर विस्तार से विचार रखे। उन्होंने प्रकृति संरक्षण के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया।

संगोष्ठी में डॉ. हेमलता ने भारतीय ज्ञान परंपरा की वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक महत्ता पर प्रकाश डाला। अंत में संस्कृत विभाग की डॉ. दीप्ति कार्की ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन रश्मि सेलवाल ने किया, जबकि तकनीकी सहयोग डॉ. महेश विश्वकर्मा सहित अन्य प्राध्यापकों ने दिया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के शिक्षक एवं बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

NEWS REPORT

भारतीय ज्ञान परम्परा एवं जीव विज्ञान विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन।

August 6, 2026 एनएचएल नेटवर्क

Listen to this

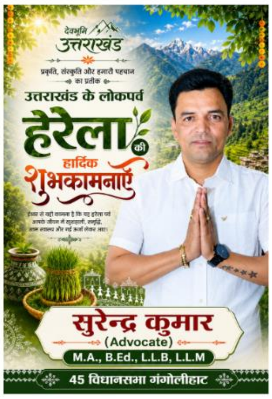

बेरीनाग संवाददाता।

बेरीनाग।राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय पिथौरागढ़ में प्राचार्य प्रोफेसर बी एम पाण्डेय के मार्गदर्शन में नई शिक्षा नीति 2020 के 6 वर्ष पूर्ण होने पर अखिल भारतीय शिक्षा समागम के तहत वनस्पति विज्ञान विभाग, जंतु विज्ञान विभाग एवं संस्कृत विभाग के संयुक्त तत्वाधान में "भारतीय ज्ञान परंपरा और जीव विज्ञान" विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का हाइब्रिड मोड पर आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में उत्तराखंड मैती आन्दोलन के प्रणेता एवं पद्मश्री से सुशोभित डॉ कल्याण सिंह रावत जी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० पाण्डेय जी के द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस उपलक्ष पर उन्होंने अपने संबोधन में स्थानीय एवं वैश्विक स्तर पर जीव-जंतुओं व भारतीय संस्कृति के बीच समन्वय स्थापित करने की बात कही। साथ ही उन्होंने बताया कि हमारे नीति-निर्धारकों को प्रकृति-संरक्षण हेतु एक सुदृढ़ SOP तैयार करना जरूरी है और हमे अपने व्यवहार में नियंत्रण करना जरूरी है।

https://www.newshomelive.co.in/organization-of-one-day-seminar-on-indian-knowledge-tradition-and-biology/

Organizing Secretary

Dr. Aman Verma

Assistant Professor Zoology

Govt. Post Graduate College Berinag

Principal

Govt. Post Graduate College Berinag

(एकदिवसीय संगोष्ठी)

DATE 05 08 2026

भारतीय ज्ञान परम्परा और जीवविज्ञान

(Indian Knowledge System and Life Science)

आज दिनाँक 05 अगस्त, 2026 को रा० स्ना० महा० बेरीनाग पिथौरागढ़ में प्राचार्य प्रो० बी० एम० पाण्डेय के मार्गदर्शन में "~~भारतीय ज्ञान परम्परा~~" नई शिक्षा नीति-2020 के सफल 6 वर्ष पूर्ण होने पर अखिल भारतीय शिक्षा समागम के तहत जन्तु विज्ञान विभाग, वनस्पति विज्ञान विभाग एवं संस्कृत विभाग के संयुक्त तत्वावधान में "भारतीय ज्ञान परम्परा और जीव विज्ञान" विषय पर एक-दिवसीय संगोष्ठी का हाइब्रिड मोड पर आयोजन किया गया। जिसमें मुख्यवक्ता के रूप में उत्तराखण्ड मैती आन्दोलन के प्रणेता एवं पद्मश्री से अलंकृत डॉ० कल्याण सिंह रावत जी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारम्भ महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० पाण्डेय जी के द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस उपलक्ष पर उन्होंने अपने सम्बोधन में स्थानीय एवं वैश्विक स्तर पर जीव-जन्तुओं व भारतीय संस्कृति के बीच समन्वय स्थापित करने की बात कही। साथ ही उन्होंने बताया कि हमारे नीति-निर्धारकों को प्रकृति संरक्षण हेतु एक सुदृढ़ SOP तैयार करना जरूरी है और हमें अपने व्यवहार में निमन्त्रण करना भी जरूरी है।

तत्पश्चात वनस्पति विज्ञान की विभाग प्रभारी डॉ० हेमलता ने बताया कि भारतीय ज्ञान परम्परा विश्व की सबसे प्राचीन, समृद्ध और समग्र शिक्षा परम्पराओं में से एक मानी जाती है, उन्होंने आगे बताया कि प्राचीन भारत ने शिक्षा का उद्देश्य आत्मबोध, आत्मविकास और प्राकृतिक संरक्षण तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करना था।

संगोष्ठी के मुख्य वक्ता श्री रावत जी ने अपने व्याख्यान में भारत की ज्ञान प्रणाली में रची गई चरक संहिता, सुश्रुत संहिता के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी साझा की, साथ ही ये भी बताया कि प्राचीनकाल में भारत में स्थित नालंदा वि०वि०, तक्षशिला वि०वि० में विशाल पुस्तकालय केन्द्र हुआ करते थे जो कालांतर में धीरे-धीरे क्षतिग्रस्त हो चुके है। साथ ही उन्होंने बताया कि प्रकृति-संरक्षण के लिए गम्भीरता से कदम उठाने होंगे जिससे आने वाली पीढ़ियाँ भी प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर सके। उन्होंने जलवायु परिवर्तन, आपदा प्रबंधन जैसे विषयों पर भी गहन चर्चा की, श्री रावत जी ने आगे बताया कि हिमालय की गोद में बसे हुए मखमली घास के मैदान ~~बुग्यालों व~~ बुग्याल - जीवन का आधार होते है, उन्होंने कहा कि बुग्याल प्राचीन काल से ही हमारी भारतीय संस्कृतिक एवं आध्यात्मिक परम्परा के प्रतीक रहे हैं, और हमें इसके संवर्धन के लिए स्थानीय स्तर पर जागरूकता अभियान ~~चला~~ चलाने की आवश्यकता है।

संगोष्ठी के अन्त में संस्कृत विभाग की प्राध्यापक डॉ० दीप्ति कार्की ने सबका धन्यवाद ज्ञापन प्रेषित किया। और प्रकृति की महत्ता को समझाते हुए मत्स्य पुराण के प्रसिद्ध श्लोक :

दशकूपसमा वापी दशवापी समो ह्रदः।
दशह्रदसमः पुत्रो दशपुत्र समो द्रुमः॥

में दस पुत्रों और एक वृक्ष के महत्व को बताया गया है,

कार्यक्रम का मंच संचालन सुश्री रश्मि ने किया और कार्यक्रम के सफल संचालन में तकनीकी सहायता डॉ० महेश चन्द्र विश्वकर्मा ने की एवं डॉ० आभा वर्मा, डॉ० मुकेश लाल शाह, डॉ० अश्वनी कुमार, डॉ० दीपिका सिंह के द्वारा कार्यक्रम में पूर्ण योगदान दिया गया, साथ ही उक्त संगोष्ठी के अवसर पर महाविद्यालय के प्राध्यापकों एवं छात्र-छात्राओं के द्वारा वृक्षारोपण भी किया गया,

उक्त कार्यक्रम में महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापक, शिक्षणेत्तर और छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे।

PAGE No.
DATE

S.No.	Name of Participants	Class/Designation	Sign
01.	Gayatri Rawat	B.SC. III Sem	Gayatri
02.	Preeti Dhanik	B.Sc. III sem	Preeti
03.	Sneha	B.SC III sem	Sneha
04.	Yashika	B.Sc III Sem	Yashika
05.	Megha Pant	B.Sc III Sem	Megha
06.	Bhawana	B.S.C III Sem	Bhawana
07.	Anshu	B.S.C III Sem	Anshu
08.	MAHIMA	B.A I Sem	[illegible]
09.	Kanchan	B.A I sem	[illegible]
10.	Soni	B.A III Sem	Soni
11.	Bhawana Karki	B.A III Sem	Bhawana
12.	Neelam Mahara	B.A I Sem	Neelam
13.	Himani Karki	B.A I sem	[illegible]
14.	Anjali Pathak	Bs.C III sem	Anjali
15.	Harshita Khati	Bs.C III sem	[illegible]
16.	Anjali Bora	B.Sc. Ist sem	Anjali Bora
17.	Tanuja Lohani	B.Sc. Ist sem	Tanuja Lohani
18.	Ashi Arya	B.S.C. Ist Sem	Ashi Arya
19.	Sneha	B.S.C Ist Sem	Sneha
20.	Suhani	B.S.C Ist Sem	Suhani
21.	Jyoti	B.S.C. Ist Sem	Jyoti
22.	MUSKAN PANDEY	B.Sc V Sem	Musk
23.	RIYA	B.Sc V Sem	Riya.
24.	Nisha Mahara	B.Sc V Sem	Nisha Mahara
25.	Saloni	B.A III sem	Saloni
26.	Karishma tamta	B.A III Sem	Karishma
27.	Simran	B.A I Sem	Simran
28.	Babita	M.Sc IIIrd Sem	Babita
29.	Rashi Pant	M.Sc IIIrd Sem	[illegible]

The Good Paper

30	Diya Rawat	M.SC III[rd] sem.	Diy
31	Sachin	M.SC III[rd] sem.	[illegible]
32	Bharat Mahara	M.SC III[rd] sem.	Bm
33	Shiwani	B.A I sem.	[illegible]
34	Suhakshi	B.A I sem.	[illegible]
35	Jiya	B.A I sem	Jiya.
36	Sumit Singh Kathayat	B.S.C. III sem	Sumit
37	Sajal Singh Dhami	BSC III sem.	Sajal
38	charu	B.A I sem.	charu
39	Deepika	B.A I sem	Deepika
40	Deepa	B.A I sem	Deepa
41	Nitesh	B.A V sem	Nitesh
42	Anish Singh	B.Sc III sem	Anish
43	Sujal Raj	BSC III sem	Sujal
44	Dilanshu Arya	BSC III sem	[illegible]
45	Saurabh Kumar	BSC I-sem	Saurabh
46	Rahul Mehra	B.A I. sem	Rahul
47	Darshan Singh Bora	B.A I. sem	Darshan
48	kavindra singh Rawat	B.A I sem	kavindra
49	AJAY	B.A. I sem	Ay
50	Amit Bafila	B.SC I[st] sem	Amit
51	Sachin Kumar	BSC III sem	Sachin
52	Sujal Kumar	B.Sc I[st] sem	Sujal
53	Sumit Kumar	B.Sc. I[st] sem	[illegible]
54	Bharat Singh	B.A I sem	Bharat
55	Gaurav	B.A I sem	[illegible]
56	Suresh Kumar	B.A V sem	[illegible]

DATE

57.	Karan Bhatt	BSc 3rd sem	Karan
58	Divya Nagila	BSc 3rd sem	Divya
59.	Jyoti Pant	BSc 3rd sem	Jyoti
60.	Diya	BSc 3rd Sem	[illegible]
61.	Kavya Arya	BA. Ist sem	Kavya
62.	Sanjana Bora	B.A. Ist sem	Sanjana
63.	Khushi Bora	B.A. Ist sem	Khushi
64.	Rakhi	B.A III sem	Rakhi
65.	Pallavi	B.A III sem.	Pallavi
66	Anjali	B.A I sem	Anjali
67.	Naincy	B.A I sem	Naincy
68.	Himanshi	B.A I sem	Himanshi
69	Lalita Mahara	B.A I sem	Lalita Mahara
70	Nirmala Karki	B.A 1st sem	Nirmala Karki
71	Riya Karki	B.A Ist sem	Riya
72	Nikita	B.A Ist sem	Nikita
73.	Priyanka Beri	B.A I Sem	Priyanka
74.	Shailja Tamta	B.Sc III sem	[illegible]
75	Priyanshi	B.Sc III sem	Priyanshi
76.	Roshni Mahara	B.Sc. III Sem	Roshni
77	Vandna Karki	B.Sc III sem	VKarki
78	Priya Mahara	B.A. III Sem	Priya
79	Mamta Mahara	B.A III Sem	Mamta
80	Rachna	M.Sc. III Sem	Rachna
81	Sanjana	M.Sc. III sem	Sanjana
82	Babita Bhandari	M.Sc III Sem	Babita
83	Sunita	M.Sc. III Sem	Sunita
84	Lovely Tamta	B.Sc. I Sem	Lovely

PAGE No.
DATE

85.	Kashish Tamta	B.A I sem	Kashish
86,	KANCHANA RATHOUR	B.A. I Sem,	Kanchana
87	Jaya	B.A V Sem	Jaya
88	Saniya	B.A V Sem	Saniya
89	Harshita Rathour	B.Sc V sem	Harshita
90	Bhawana Pathak	BA III sem	Pathak
91	Chhaya Bisht	BA III Sem	Chhaya.
92	Indu	BA III Sem	Indu
93	Shakeena Arya	B.A I sem	Shakeena Arya
94	Gudiya	B.A I Sem	Gudiya
95.	Sneha Mehra	B.Sc I Sem	[illegible]
96	Priyanka Dhami	B.SC Ist Sem	Priyanka
97.	Anchal Vishwakarma	B.Sc Ist Sem.	Anchal
98.	Sheetal	B.A IIIst sem	Sheetal
99.	Roshani	B.A IIIst Sem	Roshani
100	Laxmi	B.A IIIst Sem	Laxmi
101	Rashmi	B.A 5 sem	Rashmi
102	Anjali mahara	B.A 5st Sem	Anjali
103	Aarushi Dobal	B.Sc Ist Sem	Aarushi
104	Tanuja	B.Sc Ist Sem	Tanuja
105	Sneha Dhami	B.Sc Ist sem	Sneha,,
106	Diya	B.SC Ist Sem	Diya
107	Kalpana kathayat	B.A IIIst Sem	Kalpana
108	Komal	B.A IIIst Sem	Komal
109	ArChita	B.A I sem	ArChita
110	LAXMI BACHKHETI	B.A I Sem	Laxmi.
111	Neha Bhauryal	BA I Sem	Neha
112	Suhani Rathour	B.Sc Ist sem	Suhani

113	Navya Tamta	B.Sc 1st sem	Navya
114.	Swati	B.Sc 1st sem	Swati
115.	Mamta	BA III sem	Mamta
116.	vedika	BA III sem	vedika
117.	Arti Gusain	BA I sem	Arti
118.	Priyanka	B.A I Sem	Priyanka
119	Yashoda Dobal	B.A Ist Sem	[signature]
120	Ritika Tamta	BA 5 sem	Ritika
121	Anamika Kohli	BA 5 sem	[signature]
122	Rani	BA 1st sem	Rani
123	Bindu Kumari	B.A I sem	Bindu
124	Anjali	B.A I sem	Anjali
125	Nisha	B.A I Sem	nisha
126	Neha	B.A I Sem	Neha
127	Tanuja	B.A I sem	Tanuja
128	Shruti	B.A I sem	Shruti
129	Shalini tamta	B.A I Sem	Shalini
130.	Dr. Mukesh Lal Shah	Asst. Prof. (Zoology)	[signature]
131.	Dr. Ashwani Kumar	Asst. Prof (Botany)	[signature]
132.	Dr. Aman Verma	Asst. Prof. (Zoology)	AVerma
133.	Dr. Teeka Singh	Asst. Prof (Botany)	[signature]
134.	Dr. Hemlata	Asst. Prof. (Botany)	
135.	Dr. Deepti Karki	Asst. Prof. (Sanskrit)	Deepti
136.	Dr. Pradeep Durgapal	Asst. Prof (Chem.)	[signature]
137.	Dr. Mahesh Chandra Vishwakarma	Asst. Prof (Chem)	[signature]
138.	Dr. Lakshman Singh Dev	Asst. Prof. (Phy)	[signature]
139.	Dr. Lalit Singh	Asst. Prof (Phy)	[signature]
140.	Dr. J.P. Tyagi	Asst. Prof. (Pol. Sci.)	

[signature] प्राचार्य
राजकीय प्राचार्य महाविद्यालय ... (उत्तराखण्ड)

[signature]
वि० आ० | विभाग प्रभारी
जन्तु विज्ञान विभाग